कृष्ण भजन-मैया मोरी, मैं नही माखन खायो
मैया मोरी, मैं नही माखन खायो

भोर भयो गैयन के पाछे, मधुवन मोहि पठायो ।
चार पहर वंशीवट भटक्यो, सांझ परे घर आयो ॥
॥ मैया मोरी ..... १ ॥

मैं बालक बहयिन को छोटो, छींको कहि विधि पायो .
ग्वाल-बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो ..
॥ मैया मोरी ..... २ ॥

तू जननी मन की अति भोली, इनके कहे पतयियो .
यह ले अपनी लकुटि कम्बलयिा, तुने बहुतहि नाच नचायो .
जयि तेते कछु भेद उपजहिै , जानि परायो जायो ..
\\"सूरदास\\" तब हँसी यशोदा, लै उर-कंठ लगायो ..
॥ मैया मोरी .....